श्रीयुत बाबू ननीलाल बन्धोपाध्याय-प्रणीत

अमृत-पुलिन ।

ऐतिहासिक उपन्यास ।

मुरलीधरशर्मा द्वारा अनुवादित ।

"शशिन इव दिवातनस्य लेखा
किरणपरिच्छयधूसरा प्रदोषम् ।"
कुमारसम्भवम् ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १९०६ ई० ।

प्रथमवार ११००] [मूल्य ॥)